CHRONICLE
Nurturing Talent Since 1990

1993-2022 (30 वर्ष)

सिविल सेवा प्रारंभिक परीक्षा

अध्यायवार हल प्रश्न-पत्र

सामान्य अध्ययन

सिविल सेवा परीक्षा के पाठ्यक्रम पर आधारित

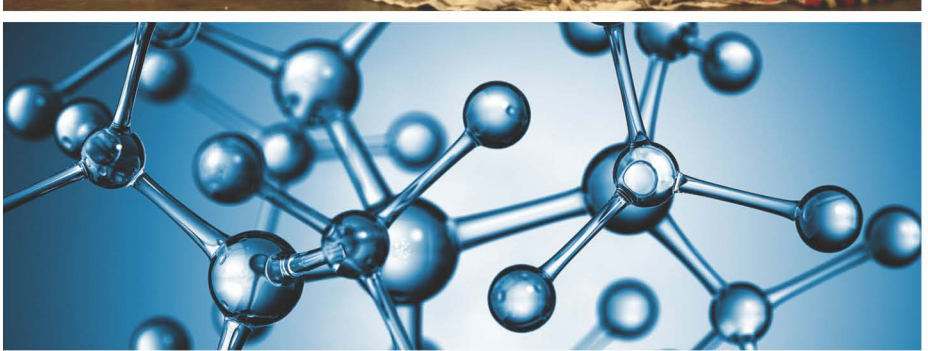

30 वर्ष हल प्रश्न-पत्र सामान्य अध्ययन प्रारंभिक परीक्षा

CHRONICLE Nurturing Talent Since 1990

यूपीएससी–सिविल सेवा

30 वर्ष

हल प्रश्न पत्र

सामान्य अध्ययन

प्रारंभिक परीक्षा

संपादकः एन. एन. ओझा
(सिविल सेवा परीक्षाओं के मार्गदर्शन में 30 से अधिक वर्षों का अनुभव)
उत्तर प्रस्तुतिः क्रॉनिकल संपादकीय समूह

CHRONICLE
Nurturing Talent Since 1990

अनुक्रमणिका

- यूपीएससी-सिविल सेवा प्रारंभिक परीक्षा 2022

सामान्य अध्ययन ..... I-XXIV

- यूपीएससी-सिविल सेवा प्रारंभिक परीक्षा 2021

सामान्य अध्ययन ..... VII-XL

भारत का इतिहास, राष्ट्रीय आंदोलन और कला एवं संस्कृति

प्राचीन भारत 1–25

- सिंधु घाटी सभ्यता 1
- वैदिक काल 1
- जैन धर्म 2
- बौद्ध धर्म 3
- महाजनपद काल 5
- मौर्य काल 5
- मर्योतर काल 6
- गुप्त एवं गुप्तोतर काल 7
- प्राचीन भारत की कला एवं संस्कृति 8
- सूफी एवं भक्ति आंदोलन 10
- दक्षिण भारत का इतिहास 11
- प्रारंभिक मध्यकालीन भारत के प्रमुख राजवंश 12
- उत्तर व्याख्या सहित 13

मध्यकालीन भारत 26–39

- भारत पर विदेशी आक्रमण 26
- दिल्ली सल्तनत 26
- विजयनगर साम्राज्य 27
- मुगल साम्राज्य 27
- मराठा साम्राज्य 31
- इतिहासकारों एवं विदेशी यात्रियों का विवरण 31
- मध्यकालीन भारत की कला एवं संस्कृति 32
- उत्तर व्याख्या सहित 33

आधुनिक भारत 40–86

- यूरोपीय कंपनियों का आगमन 40
- ब्रिटिशकालीन अर्थव्यवस्था 41
- भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की संवैधानिक संरचना 42
- 1857 का विद्रोह 45
- किसान एवं आदिवासी विद्रोह 45
- भारत में धार्मिक एवं सामाजिक पुनर्जागरण 46
- भारत में राष्ट्रवाद 46
- भारत में स्वतंत्रता आंदोलन 48
- गांधी युग 58
- अंतरिम सरकार का गठन 61
- उत्तर व्याख्या सहित 62

भारत एवं विश्व भूगोल

- भारत की भौगोलिक स्थिति 87
- भारत के भू-आकृतिक प्रदेश 89
- भारत का अपवाह तंत्र 92
- भारत की जलवायु 94
- भारत की प्राकृतिक वनस्पति 96
- ब्रह्मांड 97
- सौरमंडल 98
- पृथ्वी की गतियाँ 99
- पृथ्वी की उत्पति एवं भूगर्भिक इतिहास 100
- चटाट्ने 100
- भूकंप एवं ज्वालामुखी 100
- मृदा 101
- जलमंडल 102
- जलडमरूमध्य एवं जलसंधियाँ 104

- वायुमंडल.....104
- सूर्यताप एवं तापमान.....105
- वायुमंडलीय दाब.....105
- विश्व के जलवायु प्रदेश.....107
- भारतीय कृषि.....108
- खनिज संसाधन.....112
- भारत के उद्योग.....113
- ऊर्जा संसाधन.....114
- भारतीय जनसंख्या की संरचना.....116
- विश्व में कृषि एवं फसल उत्पाद.....116
- विश्व की नदियाँ/महासागर/मरुस्थल/बंदरगाह.....116
- भारत एवं विश्व के प्रमुख शहर/देश/महानगर.....118
- भारत एवं विश्व के प्रमुख पहाड़/पठार.....121
- विश्व खनिज उत्पाद एवं उद्योग.....121
- भारत एवं विश्व की जनसंख्या और जनजातियाँ.....122
- विश्व परिवहन.....124
- उत्तर व्याख्या सहित.....125

भारतीय राजव्यवस्था एवं शासन

- भारत का संवैधानिक विकास.....157
- संविधान का निर्माण.....157
- भारतीय संविधान के स्रोत.....159
- संघ एवं राज्य क्षेत्र.....159
- नागरिकता.....159
- मौलिक अधिकार.....160
- राज्य के नीति निदेशक तत्व.....161
- मूल कर्तव्य.....163
- केंद्र राज्य संबंध.....163
- राष्ट्रपति.....164
- उपराष्ट्रपति.....165
- प्रधानमंत्री.....165
- केन्द्रीय मंत्री परिषद्.....165
- संसद.....167
- न्यायपालिका.....173
- राज्यपाल.....176
- राज्य विधानमंडल.....177
- राजभाषा.....177
- पंचायतीराज.....177
- संवैधानिक एवं गैर संवैधानिक निकाय.....179
- कुछ वर्गों के लिए विशेष उपबंध.....182
- संविधान की अनुसूचियां.....182
- भारतीय संविधान के अनुच्छेद.....183
- संविधान संशोधन.....184
- उत्तर व्याख्या सहित.....186

आर्थिक एवं सामाजिक विकास

- परिचय एवं अवधारणा.....218
- आर्थिक विकास.....219
- आर्थिक नियोजन.....220
- कृषि एवं संबद्ध क्षेत्र.....221
- उद्योग.....224
- सेवा क्षेत्र.....226
- मुद्रा एवं बैंकिंग.....226
- बीमा एवं पूंजी.....233
- वित्, राजकोषीय नीति एवं जीएसटी.....233
- विदेशी व्यापार एवं भुगतान.....238
- मानव एवं सामाजिक आर्थिक विकास.....241
- अंतरराष्ट्रीय संस्था एवं व्यापारिक संगठन.....243
- उत्तर व्याख्या सहित.....244

सामान्य विज्ञान

- विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी.....269
- उत्तर व्याख्या सहित.....280
- जीव विज्ञान.....292
- उत्तर व्याख्या सहित.....308
- भौतिक विज्ञान.....322
- उत्तर व्याख्या सहित.....331
- रसायन विज्ञान.....339
- उत्तर व्याख्या सहित.....346

पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी

- पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी.....353
- खाद्य शृंखला.....356
- जैव विविधता.....357
- प्रदूषण.....367
- जलवायु परिवर्तन.....370
- सतत विकास.....372
- उत्तर व्याख्या सहित.....373

यूपीएससी-सिविल सेवा प्रारंभिक परीक्षा 2022

सामान्य अध्ययन

भारत का इतिहास

प्राचीन भारत

1. निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिए:

अशोक के प्रमुख शिलालेखों के स्थान		**वह स्थान जिस राज्य में है**
1. धौली	–	ओडिशा
2. एर्रगुडी	–	आंध्र प्रदेश
3. जौगड़	–	मध्य प्रदेश
4. कालसी	–	कर्नाटक

उपर्युक्त युग्मों में से कितने सही सुमेलित हैं?

(a) केवल 1 (b) केवल 1 एवं 2
(c) केवल 1, 2 एवं 3 (d) सभी चारों युग्म

(IAS 2022)

उत्तर: (b), एर्रगुडी आंध्र प्रदेश के कुर्नूल जिले में स्थित है, यहाँ अशोक के शिलालेख प्राप्त हुए हैं।

- धौली ओडिशा शहरी केंद्र है। सम्राट अशोक के प्रसिद्ध शिलालेखों में से एक यहाँ स्थित है।
- जौगड़ा ओडिशा के गंजम जिले में बेरहामपुर और पुरुषोत्तमपुर शहरों के निकट स्थित है। यह कलिंग प्रांत की मौर्य गढ़वाली राजधानी के रूप में कार्य करता था। यहाँ से प्राप्त शिलालेख को कलिंग शिलालेख भी कहा जाता है।
- कालसी वर्तमान में उत्तराखंड के देहरादून में स्थित है, यहाँ से प्राप्त अशोक के अभिलेख की भाषा प्राकृत तथा लिपि ब्राह्मी है।
- यह अभिलेख बौद्ध-धर्म के मुख्य सिद्धान्तों का संग्रह है, जिसमें अहिंसा पर सबसे अधिक बल दिया गया है। जॉन फॉरेस्ट द्वारा सन् 1860 में प्रकाश में लाया गया।

2. भारतीय इतिहास के संदर्भ में, निम्नलिखित मूलग्रंथों पर विचार कीजिए:

1. नेत्तिपकरण 2. परिशिष्टपर्वन
3. अवदानशतक 4. त्रिशष्टिलक्षण महापुराण

उपर्युक्त में कौन-से जैन ग्रंथ हैं?

(a) 1, 2 और 3 (b) केवल 2 और 4
(c) 1, 3 और 4 (d) 2, 3 और 4

(IAS 2022)

उत्तर: (b), परिशिष्टपर्वन हेमचन्द्र द्वारा रचित 12वीं शताब्दी का संस्कृत महाकाव्य है, जो प्रारंभिक जैन शिक्षकों के इतिहास का विवरण प्रस्तुत करता है।

- त्रिशष्टिलक्षण महापुराण एक प्रमुख जैन ग्रंथ है, जिसकी रचना मुख्य रूप से आचार्य जिनसेना ने राष्ट्रकूट शासक अमोघवर्ष के शासन के दौरान की थी। इस ग्रन्थ को गुणभद्र के द्वारा नौवीं सदी में पूरा किया गया था।
- महापुराण में दो भाग हैं। पहला भाग 'आचार्य' जिनसेन द्वारा लिखित आदि पुराण है। दूसरा भाग उत्तरपुराण है, जो गुणभद्र द्वारा रचित खंड है।
- बौद्धों का संस्कृत भाषा में चरित प्रधान साहित्य अवदान साहित्य कहलाता है। यह दस वर्गों में विभक्त है तथा प्रत्येक वर्ग में दस-दस कथाएँ हैं। इन कथाओं का रूप थेरवादी (हीनयानी) है। दिव्यावदान, अवदानशतक के कथानक तथा काव्यशैली से विशेषत: प्रभावित हुआ है।
- नेतिप्रकरण एक बौद्ध ग्रंथ है, जिसे कभी-कभी थेरवाद बौद्ध धर्म के पाली कैनन के खुदाका निकाय में शामिल किया गया था।

3. भारतीय इतिहास के संदर्भ में, निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिए:

ऐतिहासिक व्यक्ति		**किस रूप में जाने गए**
1. आर्यदेव	–	जैन विद्वान
2. दिग्नाग	–	बौद्ध विद्वान
3. नाथमुनि	–	वैष्णव विद्वान

उपर्युक्त युग्मों में से कितने युग्म सही सुमेलित हैं?

(a) कोई भी युग्म नहीं (b) केवल एक युग्म
(c) केवल दो युग्म (d) सभी तीन युग्म

(IAS 2022)

उत्तर: (c), दिग्नाग भारतीय बौद्ध विद्वान और भारतीय तर्कशास्त्र के बौद्ध संस्थापकों में से एक थे। दिग्नाग 6वीं शताब्दी के आरंभिक भारतीय बौद्ध भिक्षु एवं भारतीय तर्कशास्त्र विद्या के संस्थापक थे। उनका जन्म कांचीपुरम के पास सिंहवक्त्रा में हुआ था।

- आर्यदेव (तीसरी शताब्दी) महायान बौद्ध भिक्षु, नागार्जुन के शिष्य और मध्यमा दार्शनिक थे। इनका प्रारंभिक भारतीय मध्यमा दर्शन के विकास में महत्वपूर्ण योगदान था।

भारत का भूगोल

1. निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिए:

	शिखर		पर्वत
1.	नामचा बरवा	–	गढ़वाल हिमालय
2.	नंदा देवी	–	कुमाऊं हिमालय
3.	नोकरेक	–	सिक्किम हिमालय

उपर्युक्त युग्मों में कौन-सा/से सही सुमेलित है/हैं?

(a) 1 और 2 (b) केवल 2
(c) 1 और 3 (d) केवल 3

(IAS 2022)

उत्तर: (b), नंदादेवी चोटियाँ कुमाऊँ हिमालय का एक भाग है। यह कंचनजंगा के बाद भारत का दूसरा सबसे ऊंचा पर्वत है। यह उत्तराखंड के चमोली जिले में स्थित है।

- ❖ नामचा बरवा तिब्बत में पेमाको क्षेत्र में स्थित एक पर्वत शिखर है। यह दक्षिण-पूर्वी तिब्बत और उत्तर-पूर्वी भारत में हिमालय का सबसे पूर्वी भाग है।
- ❖ सतलुज और काली नदियों के बीच स्थित हिमालय के हिस्से को कुमाऊं हिमालय के नाम से जाना जाता है। कुमाऊं हिमालय में हिमालय की महत्वपूर्ण चोटियाँ नन्दादेवी, कॉमेट, त्रिशूल, बद्रीनाथ, केदारनाथ एवं बन्दरपूँछ हैं।
- ❖ कुमाऊं हिमालय की सबसे ऊंची चोटी नंदादेवी है। इसकी ऊंचाई 7,8167 मीटर (25,643 फीट) है। कुमाऊं हिमालय का विस्तार सतलज नदी से काली नदी तक 320 किमी की लंबाई में है।
- ❖ नोकरेक चोटी भारत के उत्तर-पूर्व में तुरा रेंज पर स्थित है, जो मेघालय पठार का हिस्सा है। नोकरेक गारो पहाड़ियों की सबसे ऊंची चोटी है, जो 1,412 मीटर ऊँची है।
- ❖ वृहद् हिमालय का विस्तार पश्चिम में नंगा पर्वत से लेकर पूर्व में नामचा बरवा चोटी तक विस्तृत है। नामचा बरवा पर्वत श्रेणी तिब्बत के अंतर्गत आती है।

2. भारत के सन्दर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. मोनाजाइट दुर्लभ मृदाओं का स्रोत है।
2. मोनाजाइट में थोरियम होता है।
3. भारत की समस्त तटवर्ती बालुकाओं में मोनाजाइट प्राकृतिक रूप में होता है।
4. भारत में केवल सरकारी निकाय ही मोनाजाइट संसाधित या निर्यात कर सकते हैं।

उपर्युक्त कथनों में कौन-से सही हैं?

(a) केवल 1, 2 और 3 (b) केवल 1, 2 और 4
(c) केवल 3 और 4 (d) 1, 2, 3 और 4

(IAS 2022)

उत्तर: (b), मोनाजाइट दुर्लभ मृदा तत्त्वों थोरियम, लैंथेनम और सेरियम का एक महत्त्वपूर्ण अयस्क है। हालांकि मोनाजाइट भारत के पूरे तट पर पाया जाता है, यह प्राकृतिक रूप से पूरे तट पर नहीं होता है। यह भारत के समस्त तटवर्ती क्षेत्रों में नहीं पाया जाता है।

- ❖ परमाणु ऊर्जा विभाग (DAE) ने भारत के तटीय इलाकों में समुद्र तट रेत खनिज प्लेसर जमा में 11.93 मिलियन टन मोनाजाइट संसाधनों की उपस्थिति का अनुमान लगाया है।
- ❖ सामान्य रूप से मोनाजाइट में लगभग 55-60% कुल दुर्लभ पृथ्वी ऑक्साइड होता है।

मोनाजाइट के राज्यवार स्रोत

राज्य	मोनाजाइट (मिलियन टन)	राज्य	मोनाजाइट (मिलियन टन)
ओडिशा	2.41	पश्चिम बंगाल	1.22
आंध्र प्रदेश	3.72	झारखंड	0.22
तमिलनाडु	2.46	कुल	11.93
केरल	1.90		

- ❖ वर्ष 1933 तक निजी कंपनियों को समुद्र तट की बालुकाओं में खनिजों का उत्खनन करने की अनुमति नहीं थी। उदारीकरण के बाद, निजी कंपनियों को शुरू में गार्नेट और सिलीमेनाइट की खान में खनन करने की अनुमति दी गई थी और इसके बाद अन्य खनिजों के लिये अनुमति दी गई थी।
- ❖ वर्ष 2016 में पहले के एक संशोधन ने निजी कंपनियों को समुद्र तट की रेत के खनन पर रोक लगा दी, जहाँ मोनाजाइट की संकेंद्रण 0.75% से अधिक था। निजी फर्मों को मोनाजाइट के प्रसंस्करण या निर्यात से प्रतिबंधित किया गया है। इस पर सरकारी एकाधिकार बना हुआ है, जिसे परमाणु ऊर्जा विभाग के दायरे में रखा गया है।

3. निम्नलिखित राज्यों पर विचार कीजिए:

1. आंध्र प्रदेश 2. केरल
3. हिमाचल प्रदेश 3. त्रिपुरा

उपर्युक्त में से कितने आम तौर पर चाय-उत्पादक राज्य के रूप में जाने जाते हैं?

(a) केवल एक राज्य (b) केवल दो राज्य
(c) केवल तीन राज्य (d) केवल चारों राज्य

(IAS 2022)

उत्तर: (c), वर्तमान में भारत में प्रमुख चाय उत्पादक राज्य असम, पश्चिम बंगाल, त्रिपुरा, तमिलनाडु, केरल और कर्नाटक हैं। कुछ सीमा तक हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड भी पारंपरिक चाय उत्पादक राज्य हैं।

- ❖ हिमाचल प्रदेश में चाय मंडी और कांगड़ा जिलों में 2,063 हेक्टेयर क्षेत्र में उगाई जाती है। कांगड़ा, जिसे 'देवताओं की घाटी' के रूप में जाना जाता है, अपनी विशिष्ट स्वाद वाली चाय के लिए प्रसिद्ध है।
- ❖ त्रिपुरा को लगभग 54 चाय बागानों, 21 चाय प्रसंस्करण कारखानों और 2,500 से अधिक छोटे चाय उत्पादकों के साथ पारंपरिक चाय उत्पादक राज्य के रूप में वर्गीकृत किया गया है।

भारतीय राजव्यवस्था एवं शासन

1. यदि किसी विशिष्ट क्षेत्र को भारत के संविधान की पांचवीं अनुसूची के अधीन लाया जाय, तो निम्नलिखित कथनों में कौन-सा एक, इसके परिणाम को सर्वोत्तम रूप से प्रतिबिंबित करता है?

(a) इससे जनजातीय लोगों की जमीनें गैर-जनजातीय लोगों को अंतरित करने पर रोक लगेगी
(b) इससे उस क्षेत्र में एक स्थानीय स्वशासी निकाय का सृजन होगा
(c) इससे वह क्षेत्र संघ राज्यक्षेत्र में बदल जाएगा
(d) जिस राज्य के पास ऐसे क्षेत्र होंगे, उसे विशेष कोटि का राज्य घोषित किया जाएगा

(IAS 2022)

उत्तर: (a), संविधान के अनुच्छेद 244(1) में अभिव्यक्ति 'अनुसूचित क्षेत्र' का अर्थ ऐसे क्षेत्रों से है, जिन्हें राष्ट्रपति आदेश द्वारा अनुसूचित क्षेत्र घोषित कर सकते हैं।

पांचवीं अनुसूची क्षेत्रों के लिए विशेष प्रावधान

- अनुसूचित क्षेत्रों (एसए) वाले प्रत्येक राज्य का राज्यपाल सालाना, या जब भी राष्ट्रपति द्वारा आवश्यक हो, उस राज्य में अनुसूचित क्षेत्रों के प्रशासन के संबंध में राष्ट्रपति को एक रिपोर्ट प्रस्तुत करेगा।
- अनुसूचित क्षेत्रों के प्रशासन के संबंध में राज्यों को निर्देश देने के लिए केंद्र सरकार के पास कार्यकारी शक्तियां होंगी।
- राज्यपाल, सार्वजनिक अधिसूचना द्वारा, निर्देश दे सकता है कि संसद या राज्य के विधानमंडल का कोई विशेष अधिनियम, ऐसे अपवादों और संशोधनों के अधीन, जैसा कि निर्दिष्ट किया गया है, अनुसूचित क्षेत्र या राज्य के किसी भाग पर लागू होगा या नहीं।
- राज्यपाल राज्य के किसी भी क्षेत्र की शांति और अच्छी सरकार के लिए नियम बना सकता है, जो फिलहाल एक अनुसूचित क्षेत्र है। इसके तहत ऐसे क्षेत्र में अनुसूचित जनजातियों के सदस्यों द्वारा या उनके बीच भूमि के हस्तांतरण को प्रतिबंधित या प्रतिबंधित करना शामिल है।
- समथा बनाम आंध्र प्रदेश राज्य (11 जुलाई, 1997) वाद में सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि अनुसूचित क्षेत्र में सरकारी भूमि, वन भूमि और आदिवासी भूमि गैर-आदिवासियों या निजी उद्योगों को पट्टे पर नहीं दी जा सकती है।

2. भारत के सन्दर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. सरकारी विधि अधिकारी और विधिक फर्म को अधिवक्ता के रूप में मान्यता प्राप्त हैं, किन्तु कार्पोरेट वकील और पेटेंट न्यायवादी अधिवक्ता की मान्यता से बाहर रखे गए हैं।
2. विधिज्ञ परिषदों (बार कौंसिलों) को विधिक शिक्षा और विधि महाविद्यालयों की मान्यता के बारे में नियम अधि कथित करने की शक्ति है।

उपर्युक्त कथनों में कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 (b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1, न ही 2

(IAS 2022)

उत्तर: (b), बार काउंसिल ऑफ इंडिया एक वैधानिक निकाय है, जिसे एडवोकेट्स एक्ट, 1961 के तहत भारतीय बार का प्रतिनिधित्व करने के लिए बनाया गया है। बार काउंसिल ऑफ इंडिया कानूनी शिक्षा और विश्वविद्यालयों को मान्यता देने के लिए मानक तय करता है और उन विश्वविद्यालयों को मान्यता प्रदान करता है, जिनकी विधि की डिग्री छात्रों के लिये स्नातक स्तर पर अधिवक्ता के रूप में नामांकन के लिये योग्यता के रूप में काम करेगी। अत: कथन 2 सही है।

- अधिवक्ता अधिनियम 1961 की धारा 2(1) (ए) के अनुसार सरकारी विधि अधिकारी, विधिक फर्म और पेटेंट न्यायवादी अधिवक्ता के रूप में मान्यता प्राप्त हैं, जबकि कॉर्पोरेट वकील अधिवक्ता की मान्यता से बाहर हैं। अत: कथन 1 सही नहीं है।
- भारतीय विधिज्ञ परिषद, अधिवक्ता अधिनियम 1961 की धारा 4 के तहत स्थापित एक वैधानिक निकाय है, जो भारत में विधिक अभ्यास और विधिक शिक्षा को नियंत्रित करता है। इसके सदस्य भारतीय वकीलों/अधिवक्ताओं में से चुने जाते हैं और इस प्रकार वे भारतीय विधिज्ञ परिषद का प्रतिनिधित्व करते हैं। यह पेशेवर आचरण, शिष्टाचार के मानकों को निर्धारित करता है और बार/विधिज्ञ परिषद पर अनुशासनात्मक अधिकार क्षेत्र का प्रयोग करता है।

3. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. एच.एन. सान्याल समिति की रिपोर्ट के अनुसरण में न्यायालय की अवमानना अधिनियम, 1971 पारित किया गया था।
2. भारत का संविधान उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालयों को अपनी अवमानना के लिए दंड देने हेतु शक्ति प्रदान करता है।
3. भारत का संविधान सिविल अवमानना और आपराधिक अवमानना को परिभाषित करता है।
4. भारत में न्यायालय की अवमानना के विषय में कानून बनाने के लिए संसद में शक्ति निहित है।

उपर्युक्त कथनों में कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 और 2 (b) 1, 2 और 4
(c) केवल 3 और 4 (d) केवल 3

(IAS 2022)

उत्तर: (b), 1961 में एचएन सान्याल की अध्यक्षता में स्थापित समिति ने अपनी रिपोर्ट 28 फरवरी, 1963 को प्रस्तुत किया, जिसके आधार पर 'न्यायालय की अवमानना अधिनियम, 1971' अस्तित्व में आया था। इसके अनुसार, न्यायालय की अवमानना का अर्थ किसी न्यायालय की गरिमा तथा उसके अधिकारों के प्रति अनादर प्रदर्शित करना है।

- इस अधिनियम में अवमानना को 'सिविल' और 'आपराधिक' अवमानना में बाँटा गया है।
- **सिविल अवमानना:** न्यायालय के किसी निर्णय, डिक्री, आदेश, रिट अथवा अन्य किसी प्रक्रिया की जान-बूझकर की गई अवज्ञा या उल्लंघन करना न्यायालय की सिविल अवमानना कहलाता है।
- **आपराधिक अवमानना:** न्यायालय की आपराधिक अवमानना का अर्थ न्यायालय से जुड़ी किसी ऐसी बात के प्रकाशन से है, जो लिखित, मौखिक, चिह्नित, चित्रित या किसी अन्य तरीके से न्यायालय की अवमानना करती हो। इस प्रकार भारतीय संविधान के द्वारा अवमानना को परिभाषित नहीं किया गया है; अत: कथन 3 असत्य है।

यूपीएससी-सिविल सेवा प्रारंभिक परीक्षा 2021

सामान्य अध्ययन

भारत का इतिहास, राष्ट्रीय आंदोलन और कला एवं संस्कृति

प्राचीन भारत

सिंधु घाटी सभ्यता

1. निम्नलिखित में से कौन-सा प्राचीन नगर अपने उन्नत जल संचयन और प्रबंधन प्रणाली के लिए सुप्रसिद्ध है, जहां बांधों की शृंखला का निर्माण किया गया था और संबद्ध जलाशयों में नहर के माध्यम से जल को प्रवाहित किया जाता था?

(a) धौलावीरा
(b) कालीबंगा
(c) राखीगढ़ी
(d) रोपड़

उत्तरः (a), कच्छ के रन में स्थित हड़प्पा सभ्यता के शहर धौलावीरा को यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल किया गया। यह भारत का 40वां स्थल है जिसे यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल किया गया है। 1968 में खोजा गया यह क्षेत्र अपनी अद्‌भुत विशेषताओं जैसे जल निकासी व्यवस्था, बहुस्तरीय सुरक्षा प्रणाली, निर्माण कार्यों में पत्थरों का बहुतायत से उपयोग और विशेष प्रकार के कब्रिस्तानों आदि की वजह से जाना जाता है।

- गुजरात के धौलावीरा के साथ ही तेलंगाना के रूदेश्वरा/रामल्ला मंदिर को भी यूनेस्को विश्व विरासत समिति के 44वें सत्र में चीन के फुजहोऊ आयोजित सम्मलेन में सूची में शामिल किया गया। इसमें एक ओर मानव सभ्यता की उन्नति और अवनति की संपूर्णता को दर्शाने वाला हड़प्पा सभ्यता का धौलावीरा शहर है वहीं दूसरी ओर काकटीया रूदेश्वर मंदिर काकटीया संस्कृति का नायाब उदाहरण है।
- कालीबंगा राजस्थान के सिंधु घाटी सभ्यता का एक प्रसिद्ध स्थल है। यह अपने मिट्‌टी के बर्तनों और काली चूड़ियों के लिए प्रसिद्ध है। यह एक औद्योगिक स्थल था। यहाँ पहले से जुते हुए खेत, अग्नि वेदिका और एक साथ दफनाए गए युग्मों के साक्ष्य मिले हैं।
- राखीगढ़ी स्थल भारतीय उपमहाद्वीप में हड़प्पा सभ्यता के 5 बड़े स्थलों में से एक है। अन्य चार हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, गंवेरीवाला (वर्तमान में पाकिस्तान में स्थित) और धौलावीरा (गुजरात) है। एक वृहत क्षेत्र में फैले हुए पांच अंतरसंबंधित टीलों से मिलकर राखीगढ़ी का स्थल बना है। इन पांच में से दो टीलों पर घनी आबादी बसा था। भारतीय पुरातात्विक विभाग के श्री अमरेन्द्र नाथ द्वारा इस स्थल की खोज की गई। छितरैली आबादी वाला यह स्थल सिंधु घाटी सभ्यता के एक वृहत उत्खनन स्थल के रूप में प्रसिद्ध है। रोपड़ स्वतंत्र भारत का पहला सिंधु घाटी खुदाई स्थल है। रोपड़ में की गई खुदाई से सिंधु घाटी सभ्यता और हड़प्पा संस्कृति की विशेष जानकारी मिलती है।

2. निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिए:

	(ऐतिहासिक स्थान)		(ख्याति का कारण)
1.	बुर्जहोम	:	शैलकृत देव मंदिर
2.	चंद्रकेतुगढ़	:	टेराकोटा कला
3.	गणेश्वर	:	ताम्र कलाकृतियां

उपर्युक्त युग्मों में से कौन-सा/कौन-से सही सुमेलित है/हैं?

(a) केवल 1
(b) 1 और 2
(c) केवल 3
(d) 2 और 3

उत्तरः (*), बुर्जहोमः कश्मीर घाटी के बारामूला और अनन्तनाग के बीच श्रीनगर के करीब कुछ निओलिथिक स्थल है। इनमें बुर्जहोम, गुफ्फकराल और हरीपरीगोम शामिल है। बुर्जहोम के नियोलिथिक स्थलों पर गड्‌ढे पाए गए हैं। बुर्जहोम से मिले वस्तुओं में हाथ से बने लाल भूरे रंग के बर्तन और मानव और कुत्ते को एक साथ दफनाने के साक्ष्य शामिल हैं।

- बुर्जहोम में बेहतरीन यंत्र उद्योग विकसित था, जहां कुछ बेहतरीन नुकीले, हार्पुन और कांटों जैसे औजार मिले हैं। यह स्थल गर्त्तावास और निथोलिथिक औजार उद्योग के लिए मशहूर है। अतः युग्म 1 सही सुमेलित नहीं है।
- **चंद्रकेतुगढ़ः** यह पश्चिम बंगाल के गंगा डेल्टा में अवस्थित है। प्रारंभिक ऐतिहासिक काल के चन्द्रकेतुगढ़ विधाधरी नदी द्वारा गंगा नदी से जुड़ा था और व्यापार के साथ-साथ राजनैतिक हलचलों का केंद्र भी रहा होगा। चन्द्रकेतुगढ़ टेराकोटा कला का एक वृहत केंद्र था। विभिन्न प्रकार की कलाकृतियों वाले वस्तुएं यहां से वर्षों से मिलती आ रही हैं, जिनमें सिक्के, मृदभाण्ड, सील, मुहरे तथा हाथीदांत, लकड़ी और ताम्बे की बनी आकृतियां शामिल हैं। अतः युग्म 2 सही सुमेलित है।
- **गणेश्वरः** गणेश्वर जोधपुरा संस्कृति राजस्थान के उत्तर-पूर्वी भाग में पाई गई थी। यहां पर पाई गई सैकड़ों ताम्बे की वस्तुओं से यह पता चलता है कि यह क्षेत्र ताम्र कार्य के प्रमुख केंद्र के रूप में उभरा था और यहां के लोग अन्य समुदायों को इन सामानों की आपूर्ति करते थे। अतः युग्म 3 सही सुमेलित है।

मौर्य काल

1. प्राचीन भारत के इतिहास के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा/कौन-से सही है/हैं?

1. मिताक्षरा ऊंची जाति की सिविल विधि थी और दायभाग निम्न जाति की सिविल विधि थी।
2. मिताक्षरा व्यवस्था में, पुत्र अपने पिता के जीवनकाल में ही संपत्ति पर अधिकार का दावा कर सकते थे, जबकि दायभाग व्यवस्था में पिता की मृत्यु के उपरांत ही पुत्र संपत्ति पर अधिकार का दावा कर सकते थे।
3. मिताक्षरा व्यवस्था किसी परिवार के केवल पुरुष सदस्यों के संपत्ति संबंधी मामलों पर विचार करती है, जबकि दायभाग व्यवस्था किसी परिवार के पुरुष एवं महिला सदस्यों, दोनों के संपत्ति-संबंधी मामलों पर विचार करती है।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए।

(a) 1 और 2 (b) केवल 2
(c) 1 और 3 (d) केवल 3

उत्तर: (b), कथन 1 सही नहीं है: सिविल कानून की ये दोनों प्रणालियां दायभाग और मिताक्षरा केवल उन जातियों से ही संबंधित है। दाय भाग प्रणाली पूर्वी भारत के जबकि मिताक्षरा देश के शेष भागों में पाई जाती है।

- ❖ कथन 2 सही है: दायभाग प्रणाली के अनुसार, जो कि पूर्वी भारत में पाई जाती है, केवल पिता की मृत्यु के उपरान्त ही बेटे उनकी सम्पत्ति पर अपना हक जता सकते हैं, जबकि मिताक्षरा के अनुसार पुत्र पिता के जीवनकाल में ही सम्पत्ति पर अपना हक जता सकते हैं।
- ❖ कथन 3 सही नहीं है: ये दोनों प्रणालियां महिला और पुरुष दोनों के सम्पत्ति अधिकारों से संबंधित है। मिताक्षरा में महिलाओं के सम्पत्ति अधिकारों को काफी हद तक प्रतिबंधित किया गया है। महिलाएं कभी किसी सम्पत्ति को हमवारिस नहीं बन सकती थी। किसी मृत व्यक्ति की विधवा स्त्री संपत्ति को नहीं भोग सकती थी तथा अपने पति की सम्पत्ति का हिस्सा उसके भाई से नहीं ले सकती थी, जबकि दायभाग इस मामले में थोड़ी लचीली प्रणाली है। इसके अन्तर्गत किसी मृत व्यक्ति की विधवा को संपत्ति में अधिकार प्राप्त करने का हक है।

हिन्दू कानून में हमवारिस सम्पत्ति क्या है?

- ❖ एक हिन्दू संयुक्त परिवार में अपने पूर्वज के कुछ नजदीकी वंशज शामिल होते हैं। दूसरे शास्त्रों में एक पुरुष प्रमुख और उसके वंशज जिसमें उसकी पत्नी और अविवाहित पुत्रियां शामिल होती हैं। हमवारिस लोग परिवार की एक छोटी इकाई होते हैं, जिनका सम्पत्ति पर संयुक्त अधिकार होता है।
- ❖ हमवारिस समूह में एक श्रृंखला पाई जाती है, जिसमें शीर्ष पर वंशज और उसके तीन करीबी वंशज पुत्र, पौत्र और प्रपौत्र होते हैं।
- ❖ अधिग्रहण, उपाधि और हितों की एकता की वजह से हमवारिस सम्पत्ति को संयुक्त स्वामित्व का नाम दिया जाता है। हालांकि इसकी अंग्रेजी शब्दावली सामान्य कानून से ली गई है, परंतु इसकी संकल्पना हिन्दू कानून में निहित है। भारत के ज्यादातर हिस्सों में पाई जाने वाली मिताक्षरा प्रणाली के अनुसार किसी पुरुष के उत्तराधिकारी होने के अधिकार जन्मजात होते हैं। अगर यदि किसी नए बालक का जन्म होता है यानि कि पांचवां नजदीकी वंशज जो कि महान प्रपौत्र होता है, उसको सम्पति की वंशावली में तभी शामिल किया जा सकता है जब मुख्य वंशज यानि उसके परदादा की मृत्यु हो जाए। अन्य शब्दों में उत्तराधिकार का अधिकार केवल चार पीढ़ियों तक ही रहता है। माना जाता है कि हिन्दू सिद्धान्तों के आधार पर केवल तीन पीढ़ियों के पुरुष ही पूर्वजों को आध्यात्मिक श्रद्धांजली संबंधी कार्यों का सम्पादन कर सकते हैं और केवल पुरुष ही समान उत्तराधिकारी हो सकते हैं।

परम्परागत स्वरूप क्या था और संहिताबद्ध कानूनों से यह कैसे परिवर्तित हुआ

- ❖ मिताक्षरा कानून के अनुसार किसी शीर्ष उत्तराधिकारी की मृत्यु होने पर उसकी सम्पत्तियों पर उसके वंशजों का अधिकार हो जाता है। जब हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम, 1956 लागू किया गया तो इस व्यवस्था को धारा 6 के अन्तर्गत काफी हद तक सुरक्षित कर दिया गया। यह कहा जाता है कि इस अधिनियम के प्रभाव में आने के पश्चात जब कोई हिन्दू पुरुष की मृत्यु हुई तो उसकी सम्पत्ति मिताक्षरा उत्तराधिकार नियम के अनुसार उसके वंशजों में बंटेगी न कि इस अधिनियम के हिसाब से।
- ❖ हालांकि इसमें बालिकाओं के हितों की रक्षा हेतु एक प्रावधान जोड़ा गया। इसमें कहा गया कि यदि मृत व्यक्ति के पीछे उसकी महिला रिश्तेदार जैसे पुत्री, विधवा स्त्री, या मां या पुरुष संबंधी है तो उसकी सम्पत्ति इनमें इच्छानुसार या उत्तराधिकार की इच्छा के बिना बंटेगी न कि उत्तरजीविता के आधार। इसका तात्पर्य यह हुआ कि संहिता कानूनों में भी महिलाओं के खिलाफ परम्परागत भेदभाव से निपटने के लिए कुछ नहीं किया गया।
- ❖ हालांकि कुछ अलग उपनिवेशवादी कानूनों के जरिए उत्तराधिकार के कुछ अधिकार पुत्रियों (हिन्दू कानून के सम्पत्ति उत्तराधिकार (संशोधन) अधिनियम 1929) विधवाओं (जिसकी पति की सम्पत्ति पाने के अधिकार को हिन्दू महिला सम्पत्ति अधिकार अधिनियम 1937 में वर्णित पुत्र के अधिकार के समान कर दिया गया) और उत्तराधिकार से वंचित महिलाओं के लिए सुरक्षित कर दिए गए। इन कारकों को हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम 1956 के द्वारा उन्मूलित कर दिया गया।

गुप्त एवं गुप्तोतर काल

1. गुप्त वंश के पतन से लेकर आरंभिक सातवीं शताब्दी में हर्षवर्धन के उत्थान तक उत्तर भारत में निम्नलिखित में से किन राज्यों का शासन था?

1. मगध के गुप्त 2. मालवा के परमार
3. थानेसर के पुष्यभूति 3. कन्नौज के मौखरि
5. देवगिरि के यादव 6. वल्लभी के मैत्रक

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए।

(a) 1, 2 और 5 (b) 1, 3, 4 और 6
(c) 2, 3 और 4 (d) 5 और 6

उत्तर: (b), छठी शताब्दी में हूणों ने मालवा, गुजरात, पंजाब और गंधार पर अधिकार कर लिया। हूणों के आक्रमणों की वजह से देश में गुप्त साम्राज्य की पकड़ ढीली होने लगी। फलस्वरूप पूरे उत्तर भारत में स्वतंत्र शासक उभरे जैसे मालवा में यशोवर्मन, उत्तर प्रदेश में मौखरि, सौराष्ट्र में मैत्रक और कई बंगाल में शासक उभरे। इस प्रकार गुप्त साम्राज्य मगध तक ही सिमट कर रह गया। गुप्त साम्राज्य के पतन के बाद उत्तरी भारत कई अन्य शासकों द्वारा लूटा गया।